समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

गुरुपूर्णिमा विशेषांक

लोक कल्याण सेतु

मूल्य : ₹ ४.५०

• प्रकाशन दिनांक : १५ मई २०२३ • वर्ष : २६ • अंक : ११ (निरंतर अंक : ३११) • भाषा : हिन्दी • पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

हृदयकमल में विराजमान गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता प्रकटाने का पर्व

मेरे गुरुदेव तत्त्वरूप से अनंत-अनंत ब्रह्मांडों में व्याप रहे साक्षात् ब्रह्म हैं !

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

पूज्य बापूजी
के सद्गुरु साँईं
श्री लीलाशाहजी महाराज

गुरुपूर्णिमा

गुरु बिनु भव निधि तरइ न कोई । जौं बिरंचि संकर सम होई ।।

गुरुपूर्णिमा का माहात्म्य, उद्देश्य और विधि

पढ़ें इसी अंक में

गुरुपूर्णिमा : ३ जुलाई

बापूजी को रिहा नहीं किया तो तबाही निश्चित है ! १३
– गोभक्त संत श्री कालिदासजी महाराज

जेल में बापूजी को नहीं, संस्कृति की धरोहर को रखा गया है ! १३
– श्री राजकुमार जयसवाल, वरिष्ठ पत्रकार

अनंत, अगाध है सद्गुरु की महिमा १

वर्षा ऋतु में स्वास्थ्य-सुरक्षा १५

अपने सिंहासन पर आरूढ़ हो जाओ

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू
की पावन अमृतवाणी

गुरुपूर्णिमा सचमुच में पावन उत्सव है, सुहावना उत्सव है, हमारे परम कल्याण का सामर्थ्य रखनेवाला उत्सव है । अन्य देवी-देवताओं का पूजन करने के बाद भी कोई पूजा बाकी रह जाती है किंतु उन आत्मारामी महापुरुषों की पूजा के बाद फिर कोई पूजा बाकी नहीं रहती ।

हरिहर आदिक जगत में पूज्य देव जो कोय ।
सद्गुरु की पूजा किये सबकी पूजा होय ॥

दुनियाभर के काम करने के बाद भी कई काम करने बाकी रह जाते हैं, सदियों तक भी वे पूरे नहीं होते किंतु जो ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु द्वारा बताया गया काम उत्साह से करता है उसके सब काम पूरे हो जाते हैं । शास्त्र कहते हैं :

स्नातं तेन सर्व तीर्थं दातं तेन सर्व दानं कृतं तेन सर्व यज्ञं येन क्षणं मनः ब्रह्मविचारे स्थिरं कृतम् ।

जिसने एक क्षण के लिए भी ब्रह्मवेत्ताओं के अनुभव में अपने मन को लगा दिया उसने समस्त तीर्थों में स्नान कर लिया, सब दान दे दिये, सब यज्ञ कर लिये, सब पितरों का तर्पण कर लिया ।

ऐसे ब्रह्मस्वभाव में जगे गुरुदेव कह रहे हैं : ''हे वत्स ! अब तू तेरे निज शिव-स्वभाव की ओर आ जा । अब तू ऊपर उठ । कब तक प्रकृति, जन्म-मृत्यु और दुःखों की गुलामी करता रहेगा ?

गुरुपूर्णिमा का यह उत्सव उत्थान के लिए आयोजित किया गया है । लघु को गुरु बना देना, छोटे को बड़ा बना देना, वामन को विराट बना देना, जीव को शिव के साथ एकाकार कर देना - यही गुरुपूर्णिमा का उद्देश्य है । तू विलम्ब किये बिना इस उत्सव में आकर अत्यंत आनंदपूर्वक भाग ले । आ जा... आ जा... तू तेरे अपने सिंहासन पर आकर बैठ जा । आध्यात्मिक सत्संग में उमंगपूर्वक आनेवाले साधक के लिए तो गुरु का हृदय ही सिंहासन है । उस सिंहासन पर तू आरूढ़ हो जा । तू अपनी महिमा में आ जा । तू आ जा अपने आत्मभाव में ।

हे बंधु ! हे साधक ! तू कब तक इन्द्रियों की गुलामी करता रहेगा ? कब तक तू इस संसार का बोझ वहन करता रहेगा ? कब तक अपने अनमोल जीवन को मेरे-तेरे के कचरे में नष्ट करता रहेगा ? जाग... जाग... जाग... अब तो जाग ! अहंकार को लगा दे आग और निजस्वरूप में जाग... लगा दे विषय-विकारों को आग और निजस्वरूप में जाग ! लगा दे जीवत्व को आग और शिवस्वरूप में जाग !''

लोक कल्याण सेतु

मासिक प्रकाशन

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २६ अंक : ११ (निरंतर अंक : ३११)
प्रकाशन दिनांक : १५ मई २०२३ मूल्य : ₹ ४.५०
पृष्ठ संख्या : २६ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
राकेशसिंह आर. चंदेल
प्रकाशन-स्थल :
संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण-स्थल :
हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५.
सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

*Email: lokkalyansetu@ashram.org,
*ashramindia@ashram.org
*Website: www.lokkalyansetu.org
www.ashram.org

लोक कल्याण सेतु' रुद्राक्ष मनका योजना

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ४५	(१) पंचवार्षिक :	US $५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ८०	(२) आजीवन :	US $१२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १९५		
(४) आजीवन :	₹ ४७५		

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

- गुरुपूर्णिमा का माहात्म्य, उद्देश्य और विधि..... ४
- सूखी टूटी टहनी कभी हरी-भरी हो सकती है ?..... ७
- आपको याद करने पर खुद को भूल जाता हूँ.....९
- अडिग निष्ठा.....१०
- अनंत, अगाध है सद्गुरु की महिमा.....११
- भोग की खाई से योग के शिखर तक की एक यात्रा... १३
- गुरुवर की मेहर है... - संत पथिकजी.....१४
- संतों के कल्याणकारी उपदेश.....१५
- बापूजी को रिहा नहीं किया तो तबाही निश्चित है ! - संत कालिदासजी महाराज.....१५
- जब बापूजी बैठे पायलट की सीट पर..... १६
- वर्षा ऋतु में स्वास्थ्य-सुरक्षा.....१७
- जेल में बापूजी को नहीं, संस्कृति की धरोहर को रखा गया है ! - श्री राजकुमारजी.....२०
- अमेरिका में पारित किया गया हिन्दू-विरोधी तत्त्वों के मुँह पर लगाम लगानेवाला प्रस्ताव.....२१
- घर से जाओ खा के तो बाहर मिले पका के..... २३

* 'अनादि' चैनल टाटा स्काई/प्ले (चैनल नं. ११७०) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबलों पर उपलब्ध है।
* 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। * 'अराधना' चैनल जम्मू में JK Cable पर उपलब्ध है।

* विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग *

अनादि — रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे

DIGIANA DIVYA JYOTI — रोज रात्रि १०-०० बजे

Asharamji Bapu

सेवाकार्य भी
Asharamji Ashram

Mangalmay Digital

आश्रम के आधिकारिक यूट्यूब चैनल्स

सूखी टूटी टहनी कभी हरी-भरी हो सकती है ?

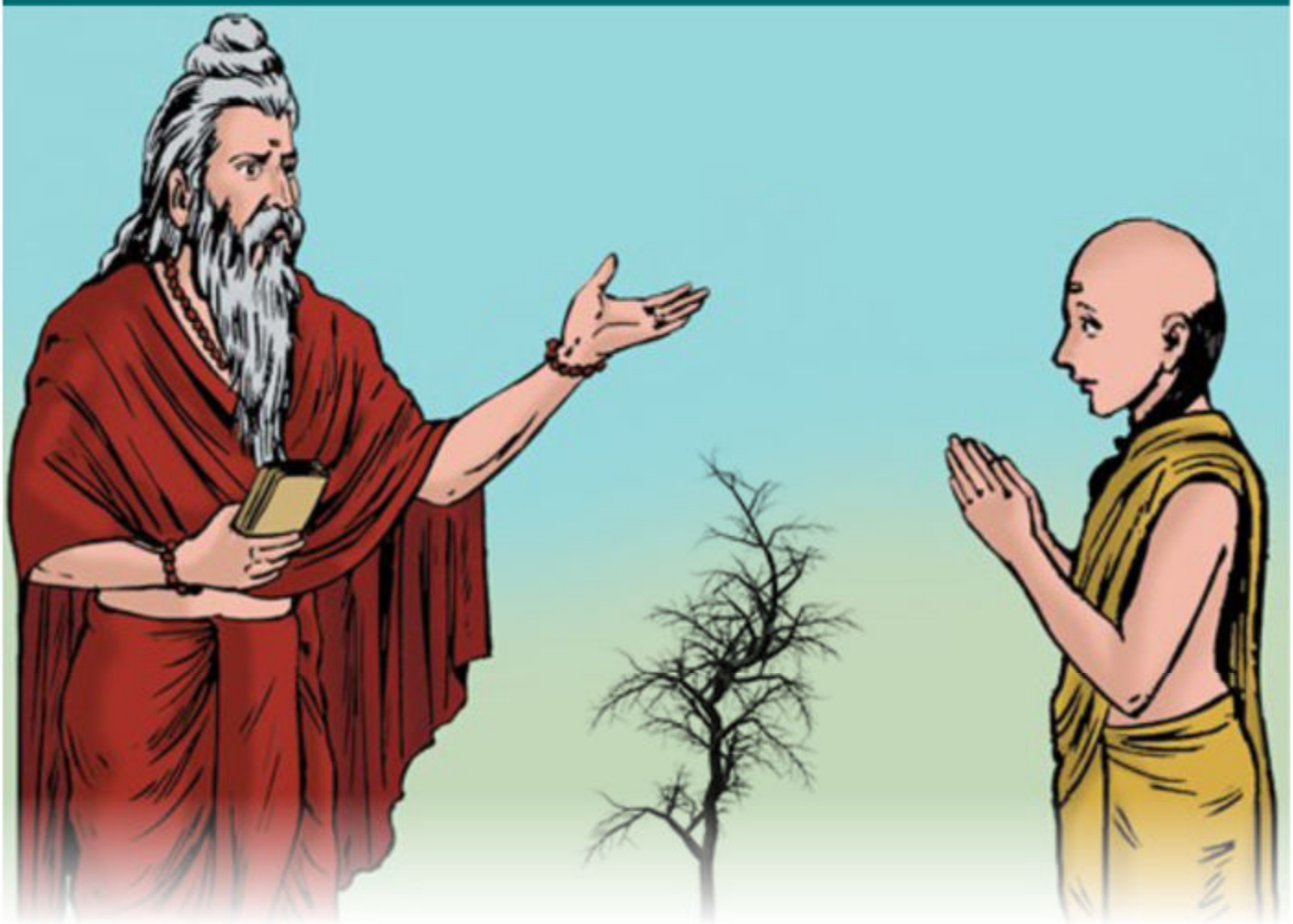

एक गाँव में नरहरि नामक एक ब्राह्मण रहता था। उसे गम्भीर त्वचा-रोग हो गया, जिससे लोग उससे दूर रहने लगे तथा अपने बचाव के लिए उन्होंने उसे गाँव छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। नरहरि गाँव से दूर चलते-चलते उस स्थान पर पहुँचा जहाँ उसके सद्गुरु का आश्रम था। गुरुदेव को प्रणाम कर उसने सब वृत्तांत बताया। दिव्य दृष्टि-सम्पन्न उसके सद्गुरु बोले : ''नरहरि ! तुम्हें यह व्याधि तुम्हारे पूर्वकर्मों के प्रभाव से हुई है। यह औषधि से नहीं मिटेगी। पूर्वकृत विपरीत कर्मों का प्रभाव हटाने के लिए अभी सत्कर्म, सत्संग और भगवन्नाम-जप करना ही एक उपाय है।''

नरहरि गुरुआज्ञा-पालन में लगा तो ऐसा लगा कि लोग देखते ही रह गये। उससे गुरु विशेष प्रसन्न रहने लगे। कुछ शिष्यों को नरहरि से ईर्ष्या होने लगी। गुरु की दृष्टि से यह बात छुपी न रह सकी।

एक बार गुरुजी ने सभी शिष्यों को बुलाया और नरहरि को अंजीर के पेड़ की एक टूटी हुई सूखी टहनी देते हुए कहा : ''नरहरि ! तुम इसे प्रतिदिन जल देते रहो, इसे हरा-भरा करना है।''

थोड़ी ही देर बाद सबने देखा कि वह टहनी रोप दी गयी है और उसे जल से सिंचित किया गया है। रोज नियत समय पर यही कार्य होने लगा। सूखी टहनी को जल देकर हरा-भरा करने की बात क्या बाहरी आँखों से दिखनेवाली इस दुनिया को ही सत्य माननेवाले सामान्य मति-गतिवाले लोगों के गले उतर पानेवाली थी ? फिर क्या था रोज कानाफूसी होने लगी कि 'यह क्या मजाक है ! ऐसा भी कभी हो सकेगा ? क्या यह निरर्थक कर्म

आपको याद करने पर खुद को भूल जाता हूँ

- ब्रह्मवेत्ता संत निलोबाजी

(जब सद्गुरु द्वारा प्राप्त ज्ञान ठीक से पचकर 'विज्ञान' हो जाता है अर्थात् वह ज्ञान मेरा अपना आपा ही है ऐसा सुदृढ़ अनुभव हो जाता है तब शिष्य के हृदय से सच्चिदानंदमय अपने सद्गुरुदेव के प्रति जो भावधारा फूट निकलती है वह इस संतवाणी में प्रकट होती है :)

नमो सद्गुरु तुकया...
...यापरी आठवी सद्गुरुला ॥

ब्रह्मज्ञान के दीपक रूपी परमात्मस्वरूप सद्गुरु तुकाराम स्वामी को मेरा नमस्कार है । सत्-चित्-आनंदस्वरूप सद्गुरुदेव को मेरा नमस्कार है । भक्तों का कल्याण करनेवाले दिव्य मूर्ति रूपी सद्गुरुदेव को मेरा नमस्कार है । जो ज्ञानरूपी सूर्य हैं और जिनका कीर्तिरूपी प्रकाश सर्वत्र फैला है ऐसे सद्गुरुदेव को मेरा नमस्कार है । हे सद्गुरुनाथ ! जिस प्रकार तरंग पानी से मिलने पर पानीरूप ही हो जाती है उसी प्रकार मैं आपको याद करता हूँ तो अपने-आपको भूल जाता हूँ।

निलोबाजी कहते हैं कि जैसे गहना सोनारूप ही होता है वैसे ही हे सद्गुरुदेव ! मैं आपको याद करता हूँ तो आपसे अलग नहीं रहता हूँ अर्थात् आत्मरूप से आपसे एक हो जाता हूँ।

अमृतबिंदु

- पूज्य बापूजी

* जिस विद्या से तुम्हारे चित्त में विश्रांति नहीं, जिस विद्या से तुम्हें भीतर का रस नहीं आ रहा वह विद्या नहीं, सूचनाएँ हैं।

* दुःख में डूबना, विरोध में डूबना या भगवान की स्मृति करके निर्लेप रहना - यह अपने हाथ की बात है।

* जो बार-बार संसार के मिथ्यात्व का खयाल करता है, अपने साक्षीस्वरूप, चैतन्यस्वरूप में आराम पाने की कोशिश करता है, संयोगजन्य सुख में जिसकी ममता नहीं है, संयोगजन्य देह में जिसकी अहंता नहीं है वह परम पद को पाता है।

भोग की खाई से योग के शिखर तक की एक यात्रा

सिंहनंद गाँव में जन्मा जीवनदास पिता के साथ दिल्ली रहने आया। वहाँ कुसंग के कारण वह वेश्याओं के पास जाने लगा और पिता की सारी कमाई उसीमें खर्च करने लगा। कई बार समझाने पर भी जब वह नहीं माना तो पिता ने उसे गाँव वापस भेज दिया।

रास्ते में जीवनदास गायकों की एक टोली में शामिल होकर आगरा चला गया। वहाँ एक सेठ के यहाँ कपड़े की दुकान में नौकरी करने लगा। जो कमाता उसे खाने-पीने और राग-रागिनियों में खर्च कर देता।

एक दिन एक ठग ने उससे १०० रुपये का माल ठग लिया। माल की भरपाई के लिए सेठ ने जीवनदास को जेल में बंद करवा दिया। ३ दिन तक जीवनदास ने कुछ खाया-पिया नहीं। अंततः वह बोला : ''मैं पिताजी से कहकर तुम्हारे पैसे लौटा दूँगा। मगर पहले मुझे यमुना में स्नान कराओ फिर ही मैं पानी पिऊँगा वरना मेरी मृत्यु का कारण तुम बनोगे।''

उसकी जिद से सेठ ने उसके हाथ बाँधकर ४ व्यक्तियों के साथ यमुना पर स्नान के लिए भेजा। यमुना-किनारे श्री वल्लभाचार्यजी संध्या-वंदन कर रहे थे तो उनकी कृपामयी दृष्टि उस पर पड़ी। उन्होंने उसे अपने पास बुलवाया और सारी बात जानकर बोले : ''जीवनदास ! नाच-गान, राग-रागिनियाँ और देखने-सुनने हैं ?''

जीवनदास : ''महाराज ! भोग भोगने और अपने हितैषी पिता की बात नहीं मानने का ही यह फल भोग रहा हूँ। भोगों ने मुझे ही भोग लिया है।''

जीवनदास की सच्चाई और पश्चात्ताप देखकर आचार्यश्री प्रसन्न हुए और उन्होंने सेठ को १०० रुपये दिलवाकर जीवनदास को मुक्त करा दिया।

संत का सान्निध्य पाकर उसका अंतःकरण कुछ शुद्ध हुआ और वह संतश्री के चरणों में प्रार्थना करने लगा : ''हे भगवन् ! उस लौकिक बंदीखाने से तो आपने मुझे छुड़ा दिया, अब संसाररूपी बंदीखाने से भी छुड़ाने की कृपा करें।''

सच्चे हृदय की प्रार्थना से वल्लभाचार्यजी ने उसे मंत्रदीक्षा दी और सिंहनंद गाँव तक पहुँचाने के लिए उसे अपने साथ ले चले। आचार्यश्री का सत्संग-सान्निध्य पाकर जीवनदास की आध्यात्मिक उन्नति अद्भुत रीति से होने लगी।

जब आचार्यश्री थानेश्वर पहुँचे तो जीवनदास के पिता को संदेशा भिजवाया। उसके पिता उसे लेने आये तो जीवनदास ने स्पष्ट कह दिया : ''आप सब लोग गुरुदेव से मंत्रदीक्षा लेंगे तो ही मैं घर आऊँगा अन्यथा नहीं।'' तो सभीने मंत्रदीक्षा ले ली। आचार्यश्री ने जीवनदास को घर में रहकर ही भगवत्सुमिरन करने की आज्ञा दी।

घर आकर उसने पूरा वृत्तांत बताया तो माता-पिता ने कहा कि गुरुदेव के द्वार पर तो देना चाहिए, उनका ऋण लेना अच्छा नहीं।

वर्षा ऋतु :
२१ जून से २३ अगस्त

वर्षा ऋतु में स्वास्थ्य-सुरक्षा

ग्रीष्म ऋतु में अत्यधिक दुर्बलता को प्राप्त हुए शरीर को वर्षा ऋतु में धीरे-धीरे बल प्राप्त होने लगता है। आर्द्र (नमीयुक्त) वातावरण जठराग्नि को मंद कर देता है। शरीर में पित्त का संचय व वायु का प्रकोप हो जाता है। परिणामतः वात-पित्तजनित व अजीर्णजन्य रोगों का प्रादुर्भाव होता है। अतः इन दिनों में जठराग्नि को प्रदीप्त करनेवाला, सुपाच्य व वात-पित्तशामक आहार लेना चाहिए।

इस ऋतु में उपयोगी कुछ बातें

(१) भोजन से पूर्व अदरक व नींबू के रस में सेंधा नमक मिला के सेवन करने से वर्षाजन्य रोगों से सुरक्षा में बहुत मदद मिलती है।

(२) १ गिलास गुनगुने पानी में १-२ नींबू का रस व २ चम्मच शहद* मिलाकर सुबह खाली पेट लें। यह प्रयोग सप्ताह में ३-४ दिन करें।

(३) खाली पेट सुबह सूर्य की किरणें नाभि पर पड़ें इस प्रकार वज्रासन में बैठ जायें। श्वास बाहर निकालकर पेट को २५ बार अंदर-बाहर करते हुए 'रं' बीजमंत्र का जप करें। फिर श्वास ले लें। ऐसा ५ बार करें। इससे जठराग्नि तीव्र होगी।

अमेरिका में पारित किया गया

हिन्दू-विरोधी तत्त्वों के मुँह पर लगाम लगानेवाला

प्रस्ताव

हिन्दू धर्म व सनातन संस्कृति विरोधी ताकतों द्वारा लोगों को भ्रमित करके उन्हें हिन्दू-विरोधी बनाने के प्रयास काफी समय से होते आ रहे हैं। आजकल 'हिन्दूफोबिया' का हौआ खड़ा किया जा रहा है। हिन्दू धर्म को कट्टर और असहिष्णु साबित करने की कोशिश और कुतर्कों व गलत बयानबाजी से हिन्दू धर्म को बदनाम करने की साजिश हिन्दूफोबिया का रूप है।

हिन्दूफोबिया के चलते अमेरिका में भी हिन्दुओं के खिलाफ बनाये जा रहे माहौल का संज्ञान लेते

उन्नत व सुसंस्कारित जीवन हेतु सत्साहित्य **बाल संस्कार, हमारे आदर्श, जीवन विकास**

₹ ६ ₹ ७ ₹ ७

इनमें आप पायेंगे : ✲ कैसे हो आदर्श चरित्र का निर्माण ? ✲ स्मरणशक्ति सुविकसित करने के उपाय ✲ शिष्टाचार के नियम व प्रेरक बाल कहानियाँ ✲ परीक्षा में सफलता कैसे पायें ? ✲ स्वधर्मनिष्ठा व संस्कृति-प्रेम जगाने वाले प्रेरणादायी प्रसंग ✲ कैसे करें जीवन-विकास ? ✲ कैसे पायें बीजमंत्रों द्वारा स्वास्थ्य-सुरक्षा ?

सस्ता साहित्य, श्रेष्ठ साहित्य, पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य !

आपकी भक्ति, सरसता और शांति बढ़ाने हेतु प्रस्तुत हैं मनभावन सुगंधोंवालीं, प्राकृतिक द्रव्यों से निर्मित

'संत सेवा' अगरबत्तियाँ

✲ वातावरण को बनायें पवित्र, आह्लाददायक व सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर ✲ तनाव करें दूर, एकाग्रता बढ़ाने में मददरूप ✲ मन:शांति-प्रदायक व आध्यात्मिक वातावरण के निर्माण में सहायक ✲ बाजारू अगरबत्तियों से अनेक गुना गुणवत्तायुक्त एवं सस्ते दामोंवालीं ।

₹ १५ ५५ ग्राम | ₹ १० ४० ग्राम | ₹ १५ ५५ ग्राम | ₹ १५ ५० ग्राम | ₹ १० ४५ ग्राम | ₹ ५० १७० ग्राम | ₹ १० ४५ ग्राम | ₹ २० १०० ग्राम | ₹ २५ ५० ग्राम | ₹ १० ५० ग्राम | ₹ ३० ५० ग्राम

सेब जाम

यह स्वादिष्ट जाम पोषक तत्त्वों से भरपूर है । हृदयरोग, शारीरिक व मानसिक कमजोरी, खून की कमी (anaemia), टी.बी., भूख की कमी व कब्ज को दूर करता है । मस्तिष्क को पोषण देकर स्मृतिनाश से रक्षा करता है । यह कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को घटाने में मदद करता है ।

बेल चूर्ण

यह चूर्ण आँव-मरोड़, कमजोर पाचनशक्ति व पेट की खराबी से बार-बार होनेवाले दस्त, खूनी बवासीर एवं आँतों के घाव को दूर कर आँतों की कार्यशक्ति बढ़ाता है ।

सदाबहार तेल

यह बालों का झड़ना, असमय सफेद होना, गंजापन, रूसी आदि समस्याओं में लाभकारी है । यह बालों को काला, चमकदार तथा घना बनाने में सहायक है । टालवालों को भी बाल आ जायें यह इसकी खास विशेषता है ।

शीतलता-प्रदायक, स्वास्थ्यवर्धक गुणकारी पेय

लीची पेय : लीची करती है कमजोरी को दूर, शरीर को बनाती है पुष्ट तथा पाचनक्रिया को करती है मजबूत । **सेब पेय :** सेब है उत्तम स्वास्थ्य हेतु पोषण और स्वाद से भरपूर । **अनन्नास पेय :** अनन्नास है रोगप्रतिरोधक क्षमता, पाचनशक्ति तथा नेत्रज्योति वर्धक । **मैंगो ओज :** आम है सप्तधातुवर्धक व उत्तम हृदयपोषक ।

wt. = Net weight

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2021-2023
Issued by SSPO's-AHD
Valid upto 31-12-2023

WPP No. 02/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

विभिन्न सत्प्रवृत्तियों से महका पूज्य बापूजी का अवतरण दिवस

कीर्तन यात्राओं द्वारा भगवन्नाम के स्पंदनों का संचार

अहमदाबाद

जालंधर

अँधेरी (प.)-मुंबई

कैलिफोर्निया (यू.एस.ए.)

भैरवी (गुज.)

अलीगढ़ (उ.प्र.)

राजनांदगाँव (छ.ग.)

निवाई (राज.)

बेगुसराय (बिहार)

चांदवड, जि. नाशिक

हैदराबाद

सिमडेगा (झारखंड)

कुंभार फलिया, जि. नवसारी (गुज.)

सागर (म.प्र.)

कुरुद, जि. दुर्ग (छ.ग.)

सिवान (बिहार)

पटना

धनबाद (झारखंड)

बेमेतरा (छ.ग.)

जीवनोपयोगी सामग्री व भोजन-प्रसाद द्वारा जरूरतमंदों की सेवा

विरपुर, जि. महीसागर (गुज.)

वारक, जि. रायगढ़ (महा.)

जामनगर (गुज.)

कोटा-रायपुर (छ.ग.)

दक्षिण दिल्ली

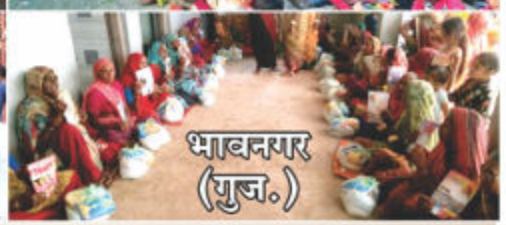
भावनगर (गुज.)

गर्मी से राहत हेतु पिलाया शीतल, तृप्तिदायक शरबत

बेंगलुरु

डोंबिवली, जि. ठाणे (महा.)

कानपुर

उदगीर, जि. लातूर (महा.)

पंढरपुर (महा.)

सहरपाड़ा, जि. केंदुझर (ओड़िशा)

दमोह (म.प्र.)

कोयम्बटूर (तमिलनाडु)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन लोक कल्याण सेतु, ऋषि प्रसाद व ऋषि दर्शन की सदस्यता हेतु स्कैन करें :

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम प्रकाशक और मुद्रक : राकेशसिंह आर. चंदेल प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चर्स, कुंजा मतरालियों, पाँटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी